

बहुत ढूँढा तुम्हे कान्हा

बहुत ढूँढा तुम्हे कान्हा कहा तुम छिप गये जाने
गोकुल ढूँढा ब्रिज ढूँढा कहा तुम छिप गये जाने,

कही तो वो उगर होगी या से तुम गुजर ते थे
तेरी मुरली की तानो में मयु राधे थिरक ते थे,
वाहा की धुलो को माथे पे अपने यु सजा लू मैं
बहुत ढूँढा तुम्हे कान्हा कहा तुम छिप गये जाने

तुम्हे हरगिज न भूलेगे तुम्हे प्रीतम तो मनमोहन
बंधी हु याद में तेरी ओ मोहन मैं तेरी जोगन
जो योग लगा लिया तुमसे वनी मीरा तुम हे पाने,
बहुत ढूँढा तुम्हे कान्हा कहा तुम छिप गये जाने

हमे पूछे के क्या होता है बिना कान्हा जिए जाना
ना दिन को चैन आता है ना रातो को लगे नैना
तुम आओ गे यही सोचे मेरा मन तो अब दिन रैना
बहुत ढूँढा तुम्हे कान्हा कहा तुम छिप गये जाने

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/18232/title/bahut-dunda-tumhe-kanha>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |